असमिया लोक साहित्य में राम
(लोकगीतों के विशेष संदर्भ में)

डॉ. अनुशब्द
संपर्क: 8876049200

लोक साहित्य लोक द्वारा निर्मित, लोक विषयक और लोक प्रचलित साहित्य है। इसका जुड़ाव विशेष रूप से श्रम और संस्कार से होता है। यह सामूहिकता की भावना को सूचित करता है, इसीलिए इसका पाठ विभिन्न उत्सवों एवं अवसरों पर होता है। लोक साहित्य हमारे पुरखों का साहित्य है। हमारे पुराने समाज का साहित्य है। इसमें जीवन के विभिन्न प्रसंगों से प्राप्त अनुभवों एवं सत्यों की वास्तविक अभिव्यक्ति होती है। इसमें भावों की अभिव्यक्ति में किसी तरह का बनावटीपन नहीं होता बल्कि भावों का भदेसपन लोक साहित्य की अपनी विशेषता होती है। इसलिए इस साहित्य की टेक्नीक और टेक्सचर में लोक की ज्यादा उपस्थिति होती है।

वास्तव में लोक साहित्य मौलिक साहित्य है। वह कच्चे-कोरवर भावों का साहित्य है। यह शास्त्रीय ज्ञान के बोझ से मुक्त तथा छंद एवं अलंकार की चिंता से रहित साहित्य है। यह अपने वाचिक रूप में किसी व्यक्ति विशेष द्वारा सृजित साहित्य नहीं है, इसीलिए इस पर कोई एक व्यक्ति न तो कॉपीराइट का दावा कर सकता है और न ही रॉयल्टी या ए.पी.आई का क्लेम ही कर सकता है। यह जनता का, जनता के लिए और जनता से जन्मा साहित्य है।

यह कहना उचित होगा कि यदि 'साहित्य समाज का दर्पण है' तो लोक साहित्य लोग समाज का, क्योंकि इसमें लोक का चेहरा ही दिखाई देता है और लोक का हृदय ही बोलता है। इसमें लोक जीवन की सभी प्रकार की भावनाएँ बिना किसी कृत्रिमता के समायी रहती हैं। लोक साहित्य की ये विशेषताएँ अविच्छिन्न रूप में लोक साहित्य के विशिष्ट अंग, लोकगीतों में भी स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ती हैं। लोकगीत लोक जीवन की अभिव्यक्ति का जीवंत और सशक्त माध्यम है। इसमें लोकहृदय के उद्गार होते हैं। देवेंद्र सत्यार्थी के शब्दों में कहें तो "लोकगीत किसी संस्कृति के मुँह बोलते चित्र होते हैं।" सामान्यतः लोक में पीढ़ियों से वाचिक रूप में प्रचलित गीतों को लोकगीत कहा जाता है। जनसामान्य के जीवन-राग, हर्ष-विषाद, आशा-निराशा, स्वप्न एवं आकांक्षाएँ आदि का निवेश इन गीतों में प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। लोकगीतों में क्षेत्र विशेष की संस्कृति, सभ्यता, परंपरा एवं वहाँ के लोक जीवन की छवि अभिव्यक्त होती है। भारत की अन्य भाषाओं के साहित्य की तरह असमिया साहित्य में भी लोकगीतों की एक प्राचीन

एवं समृद्ध परंपरा रही है। असमिया साहित्य में प्रचलित लोकगीतों को असमिया साहित्य के प्रतिष्ठित विद्वान डॉ. सत्येंद्र नाथ शर्मा ने मूलतः तीन श्रेणियों में विभक्त किया है- अनुष्ठानमूलक, आख्यानममूलक और विविध विषयक गीत। इन तीनों के अंतर्गत असमिया समाज और संस्कृति में प्रचलित कई प्रकार के लोकगीत आते हैं जिनमें से प्रमुख हैं- निसुकनि गीत, बिया नाम, बिहू गीत, बारमाही गीत, नावखेलोवा गीत, दिहा नाम, दुर्गा नाम, तुलसी नाम आदि। वैसे तो इन लोकगीतों की विषयवस्तु में काफी वैविध्य है लेकिन रामकथा या राम से संबंधित कहानियों को इन लोकगीतों में केंद्रीयता प्राप्त है। हालाँकि, पूरा पूर्वोत्तर भारत विशेष रूप से असम कृष्ण भक्ति प्रधान क्षेत्र है।

दरअसल, राम और कृष्ण मनुष्यता के बहुत बड़े सपनों के नाम हैं। वे हमारी पुतलियों में नाचते हैं, धमनियों में तैरते हैं। रामकथा की जड़ें बहुत गहराई में जमी हुई हैं। इसकी उपस्थिति विभिन्न अक्षांशों एवं देशांतरों से परे है। इसीलिए यह केवल भारतीय या उत्तर भारतीय कथा नहीं है बल्कि पूर्वोत्तर भारत की कला, साहित्य एवं संस्कृति में भी यह कथा उतनी ही रची-बसी है। आदिकवि वाल्मीकि की रामकथा के बाद यदि हम आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में रचित राम कथाओं पर गौर करें तो हम पाते हैं कि सबसे पहले पूर्वोत्तर भारत की एकमात्र आर्यभाषा असमिया में रामकथा की विधिवत उपस्थिति मिलती है, जिसे हम 'अप्रमादी कवि' माधव कंदली द्वारा 14 वीं सदी में रचित 'सप्तकांड रामायण' के रूप में देखते हैं। बाद में इनके शिष्य श्रीमंत शंकरदेव एवं माधवदेव की रचनाओं में भी रामकथा का जिक्र मिलता है। हालाँकि, असमिया लोक जीवन में वाचिक रूप में रामकथा की परंपरा और भी पुरानी है। यहाँ की जनजातियों के लोकगीतों में यह कथा कब से चली आ रही है उसकी एक तारीख सुनिश्चित करना असंभव है। उदाहरण के रूप में हम कार्बी जनजाति में मौखिक रूप में प्रचलित रामकथा 'साबिन आलुन' को देख सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि राम और रामकथा का असमिया लोकजीवन और लोक साहित्य में अत्यंत जीवंत एवं प्राचीन उपस्थिति है। इसका साक्ष्य हमें राम के जीवन पर आधारित विभिन्न असमिया लोककथाओं, लोकगीतों, लोकनाट्य रूपों, मुहावरों, लोकोक्तियों आदि में मिलता है। अगर हम असमिया लोकगीतों में रामकथा की तलाश करें तो हम देखते हैं कि व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक के हर संस्कार में राम और उनके जीवन से जुड़ी घटना-प्रसंगों का बहुत ही सजीव वर्णन है। इस क्रम में हम देखते हैं कि एक ओर शिशु जहाँ माँ की गोद में राम पर केंद्रित निसुकनि गीत (लोरी) सुनकर सोता है तो दूसरी ओर जीवन के अंतिम क्षणों में लोग राम का नाम जपते हुए आखिरी सांस लेते हैं। यानी राम नाम की इयत्ता एवं महत्ता जीवन-पर्यंत परिलक्षित होती है। राम अपने मर्यादा एवं आदर्शों के कारण देश और काल से परे हैं। और, इसीलिए साहित्य, कला और संस्कृति में भी भिन्न-भिन्न रूपों में मौजूद हैं। घर की पुरानी पीढ़ियां अपने आने वाली पीढ़ियों में रामकथा के प्रेरक प्रसंगों का लोकगीतों एवं लोक कथाओं के माध्यम से निवेश कर उनमें दया, करुणा, सहानुभूति, न्याय इत्यादि जैसे उच्च मानवीय मूल्यों का संचार करती हैं। असमिया लोकगीतों में एक तरफ राम आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श शिष्य आदि के रूप में वर्णित हैं तो दूसरी तरफ

निर्दोष सीता को वनवास देने वाले निष्ठुर पति के रूप में तथा शम्बुक का वध कर शूद्र के प्रति अन्याय करने वाले राजा के रूप में भी उनके चरित्र का वर्णन मिलता है। इसी तरह बिहू गीतों में आनंद और उत्साह के क्षणों में राम का स्मरण किया जाता है। साथ ही विवाह जैसे पवित्र संस्कारों की विभिन्न विधियों में भी राम, सीता आदि मौजूद होते हैं।

निसुकनि गीतों में रामकथा:

यदि हम असमिया लोकगीतों में मानव जीवन की शैशवास्था से रामकथा की उपस्थिति को देखें तो सबसे पहले हमारा ध्यान निसुकनि गीतों पर जाता है। निसुकनि गीत यानी लोरी। माताएँ अपने शिशुओं को सुलाते समय हल्की-हल्की थपकी के साथ जो मधुर गीत सुनाती हैं उसे लोरी या निसुकनि गीत कहते हैं। हालाँकि आज के व्यस्त भौतिकतावादी जीवन में यह परंपरा भी धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है। खैर, इन गीतों का उद्देश्य केवल शिशुओं को सुलाना ही नहीं है बल्कि उन्हें आनंदपूर्ण तरीके से नैतिकता का पाठ पढ़ाना भी है। इसके लिए माताएँ इन गीतों में भारतीय संस्कृति के महानायकों एवं आदर्श चरित्रों की प्रेरणास्पद जीवन-प्रसंगों को गीतों में ढालती हैं। इसी क्रम में निसुकनि गीतों में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के उदात्त जीवन-चरित का, उनके जीवन से जुड़े विविध मर्मस्पर्शी एवं प्रेरक प्रसंगों का निवेश होता है। इन गीतों में कहीं राम के शौर्य एवं पराक्रम का ज़िक्र मिलता है तो कहीं उनके प्रेम, त्याग और विरह का। असमिया लोकजीवन में कई तरह के निसुकनि गीत प्रचलित हैं लेकिन राम कथा पर केंद्रित गीत बच्चों को बेहद पसंद हैं। माताएँ राम कथा के बालमन के रमने लायक प्रसंगों पर आधारित निसुकनि गीत शिशुओं को सुनाती हैं तथा यह कामना करती हैं कि इन गीतों के माध्यम से उनके बच्चों में राम जैसे उच्च मानवीय मूल्यों का संचार हो।

यदि हम अपने बालपन के दिनों को याद करें तो 'कागज की कश्ती और बारिश का पानी' वाला खेल सहज ही हमारी स्मृति में कौंध जाता है। यह खेल आज भी बच्चों में लोकप्रिय है। बालमन को आकर्षित करने वाले इस खेल के साथ राम कथा के प्रसंग को जोड़कर निर्मित एक निसुकनि गीत असमिया लोकजीवन में बहुत प्रचलित है-

	(हिंदी अनुवाद)
कलमौ पातरे नाव साजि लोलू	कलमौ के पत्तों से नाव बनवाया
इकरा पातरे बठा ।	इकरा पत्तों का पतवार।
अकल रामसंद्रई कि जज्ञ पातिसे	अकेले रामचन्द्र क्या यज्ञ करेंगे
लगत नाय सारथि सीता ॥[1]	साथ में नहीं हैं सारथी सीता॥

यहाँ ध्यान देने योग्य है कि कागज के नाव और पतवार की जगह 'कलमौ' के पत्ते का नाव और 'इकरा' पत्ते का पतवार बनाने का ज़िक्र है जो यह दर्शाता है कि इस तरह के गीतों में लोकजीवन कितनी सजगता और जीवंतता के साथ उपस्थित है। साथ ही गीत की अंतिम दो पंक्तियों में राम का उल्लेख एक विरही व्यक्ति के रूप में भी हुआ है। "अकल रामचंन्द्रई कि जज्ञ पातिसे लगत नाई सारथि सीता।" इससे व्यक्ति के जीवन में साहचर्य तथा सामाजिक जीवन के महत्व की ओर संकेत किया गया है। राम और सीता के अलगाव वाले प्रसंग से छोटे-बड़े सभी मर्माहत हो जाते हैं। बच्चों के मन पर भी ऐसी घटनाओं का गहरा असर पड़ता है।

इसी तरह बच्चे तीर-धनुष का खेल भी बहुत पसंद करते हैं। उनके इसी पसंद को ध्यान में रखते हुए निसुकनि गीतों में राम कथा के उन प्रसंगों का जिक्र किया जाता है जिसमें राम तीर-धनुष लेकर शिकार कर रहे होते हैं। ऐसे गीतों को सुनते-सुनते बच्चे स्वयं को राम की भूमिका में देखने लगते हैं तथा बहुत दिलचस्पी से उन गीतों को सुनते हैं। इस संदर्भ में हम यह गीत देख सकते हैं-

	(हिंदी अनुवाद)
कलीया तुलसीर तले मृग पहु चरे ।	तुलसी के पौधे के नीचे काले रंग का मृग चर रहा है।
ताके देखि रामचन्द्रइ शरधनु धरे ।।[2]	उसे देख कर रामचंद्र अपना धनुष उठा लेते हैं ।।

विवाह गीतों में रामकथा:

विवाह जीवन के महत्वपूर्ण संस्कारों में से एक है। इस संस्कार में कई सारी विधियों का अनुपालन होता है और लगभग हर विधि के दौरान अलग-अलग लोकगीत गए जाते हैं। यह स्थिति प्रायः हर भारतीय समाज में पायी जाती है। असमिया समाज में भी विवाह संस्कार के दौरान अलग-अलग लोकगीतों का प्रयोग होता है जिन्हें 'बियानाम' कहा जाता है। इन लोकगीतों में रामकथा के विभिन्न प्रसंगों का जिक्र मिलता है। राम और सीता इन गीतों में दूल्हा-दुल्हन के रूप में मौजूद होते हैं तथा दूल्हा-दुल्हन के माता-पिता जनक, दशरथ, कौशल्या, कैकयी आदि के रूप में। उदाहरणस्वरूप हम इस असमिया विवाह गीत को देख सकते हैं-

	(हिंदी अनुवाद)
कैकयी आहिसे सुमित्रा आहिसे	कैकयी आयी हैं सुमित्रा भी आयी हैं,
आहिसे रामरे माउ	राम की माता भी आयी हैं
जनकर जीयरी जानकी सुंदरी	जनक नंदिनी जानकी सुंदरी को
आजि जुरण पिन्धाई साँउ।[3]	आज जुड़न पहनाकर देखेंगे।

'जुड़न' से तात्पर्य उस विशेष रिवाज से है जिसमें दूल्हे की तरफ से दुल्हन को कपड़ा, आभूषण, सिंदूर आदि भेंट स्वरूप प्रदान किया जाता है। कुछ विवाह गीतों में दूल्हे को राम मानकर रामायण की कहानी को ही गीत के रूप में गाया जाता है तथा दूल्हे के साथ निकलने वाली बारात को मिथिला यात्रा, अहिल्या उद्धार की यात्रा, सीता उद्धार हेतु लंकायात्रा आदि के साथ तुलना की जाती है। जैसे -

ओई रामे धनु धर/ हनुमंतई शर धर
लोकर कइना हुई आसे लक्ष्मण तई खर कर ।[4]

अर्थात, हे राम तुम धनुष तान लो, हनुमान तुम भी बाण पकड़ो, दूल्हा-दुल्हन सो रहे हैं, लक्ष्मण तुम जल्दी करो।

असमिया विवाह गीतों में दूल्हा-दुल्हन को छेड़ने के लिए राम और सीता से तुलना की जाती है। इन गीतों में राम और सीता के मिलन-प्रसंग की बात करके दूल्हा-दुल्हन को छेड़ा जाता है।

दुल्हन के घर में जब दूल्हा आता है तब गाया जाता है-

पेपा मुरुलीये, बाजे घने-घने,
रामचन्द्र यज्ञलै जाय।
यज्ञलै जाबलै, बेला हॅल रामर,
चारेंदार सामरि थोआ।[5]

दुल्हन जब यज्ञ-स्थल (विवाह-स्थल) पर जाती है तब गाया जाता है-

राम आजि पाले मिथिला नगर
जनक रजाइ बार्ता पाले आहे रघुबर।[6]

दुल्हन जब दूल्हा को वरमाला पहनाती है तब गाया जाता है -

सखीसबे बोले सीता तुमि भाग्यवती
तोमार भैलन्त स्वामी राम रघुपति।[7]

इस प्रकार विवाह-संस्कार से जुड़े विभिन्न असमिया लोकगीतों में राम कथा अपने लोकल फ्लेवर के साथ उपस्थित हैं। कुछ विवाह गीत तो ऐसे हैं कि उनसे असमिया समाज एवं संस्कृति में स्त्रियों की स्वतंत्रता तथा श्रेष्ठता का भी बोध होता है। ऐसी स्थिति हमें न तो 'रामचरितमानस' में दिखती है और न ही 'रामायण' में। उदाहरण के तौर पर यह गीत दृष्टव्य है-

(हिंदी अनुवाद)

बिश्वामित्रई बुले हुना राम रघुवर	विश्वामित्र बोले, सुनो राम रघुवर
बाट साए आसे सीता जनकर घर	सीता जनक के घर में तुम्हारी राह देख रही है
जनकर घरे सीता आसे बात साई	जनक के घर में सीता प्रतीक्षा कर रही है।
धनुभांगि बिया कराऊँ बिदाय दिया आय	धनुष तोड़कर मैं विवाह करूंगा, आदेश दो माता।
कौशल्या बुलंत राम जुवाँ शीघ्र करि	कौशल्या बोलती है, राम जाओ शीघ्रता करो
धनु भांगि लोई आहा जानकी सुंदरी।[8]	धनुष तोड़कर सुंदरी जानकी को ले आओ।

यहाँ ध्यान देने योग्य है कि उत्तर भारतीय राम कथाओं से जहाँ पितृसत्तात्मक समाज का परिचय मिलता है वहीं असमिया रामकथा एवं लोकगीतों में स्त्री चरित्रों की सशक्त एवं गरिमापूर्ण छवि नज़र आती है। इस संदर्भ में असमिया लोकगीतों में एक क्रांतिकारी परिवर्तन देखा जा सकता है जिसमें पिता के आदेश पर चलने वाले राम ने विवाह से पूर्व केवल अपनी माता कौशल्या से आदेश मांगा है। समाज में नारी का यह महत्व पूर्वोत्तर भारत के राज्यों के लिए भले ही सामान्य बात है लेकिन विवाह से पूर्व संतान द्वारा केवल अपनी माता से आज्ञा मांगना भारत के अन्य क्षेत्रों के लिए सहज नहीं है।

यानी असमिया विवाह गीतों में स्त्री की मजबूत छवि उभरकर आती है। इन गीतों में सीता एक तरफ साधारण असमिया लड़की की तरह कपड़ा बुनती हैं, घर का काम करती हैं तो दूसरी तरफ लंका में रावण की तमाम कोशिशों के बाद भी दृढ़ता से पति-भक्ति में लीन रहती हैं। राम और सीता के स्वयंवर की कहानी भी असमिया विवाह गीतों में कुछ नये रूप में व्यक्त हुई है। स्वयंवर से पहले राजा जनक राम के समक्ष 'शिव धनुष' उठाकर प्रत्यंचा चढ़ाने की शर्त रखते हैं। तब पुष्पवाटिका में उपजे पूर्वानुराग के कारण सीता मन ही मन सशंकित हो उठती हैं कि क्या राम इस असंभव काम कर पाएंगे? अपने इसी संदेह के कारण सीता राजा जनक से अनुरोध करती हैं कि राम को धनुष तोड़ने की आवश्यकता ही नहीं, पिताजी आप हमें ऐसे ही वचन लेकर विदा कर दीजिए-

(हिंदी अनुवाद)

केनेकोई भाङिब धनु की करिला विधि	'हे विधि, तुमने यह क्या किया, धनुष कैसे भंग होगा
सीताई बोले पिता कोइला निदारूण पण	सीता कहती हैं, पिताजी आपने यह निष्ठुर प्रण लिया
बज्रसम धनु रामे की कोई दिब गुण	वज्र के समान धनुष में राम कैसे प्रत्यंचा चढ़ाएंगे
सिकन श्यामतनु राम दशरथर सुत	दशरथ के पुत्र राम तो सुंदर कोमल तन वाले हैं
केनेकोई भाङिब रामे लोहार धनुक	वे उस लोहे के धनुष को कैसे तोड़ेंगे

नेलागे भाङिब धनु हिताई दिसे हाक
होगाअंगीकार करि पितृ दियक आमाक॥[9]

सीता मना कर रही हैं कि उस धनुष को नहीं तोड़ने से भी
पिताजी हमें केवल वचन लेकर ही विदा कर दीजिए'

यह विवाह गीत इस बात की तसदीक करता है कि असमिया समाज में नारी इतनी स्वतंत्र है कि वह अपने मन की व्याकुलता को पिता के समक्ष प्रकट कर सकती है तथा विवाह जैसे महत्वपूर्ण फैसलों में हस्तक्षेप कर सकती है। हालाँकि बाद में राम अपने स्वाभिमान तथा शौर्य का परिचय देते धनुष को न केवल बाएँ हाथ से उठाते हैं बल्कि प्रत्यंचा चढ़ाकर उसे तोड़ भी डालते हैं। इसका उल्लेख विवाह गीतों में "बाँउ हाते धनु धरि माजते भङात" (बाँए हाथ से धनुष पकड़कर तोड़ने पर) के रूप में मिलता है। इस प्रकार असमिया विवाह गीतों में वर्णित राम कथा में राम कहीं साहसी, कहीं विरही, कहीं प्रजापालक तथा निष्ठावान राजा के रूप में तो कहीं गर्भवती पत्नी को वनवास देने वाले निर्दयी पति के रूप में दिखते हैं।

बिहू गीतों में रामकथा:

बिहू असमिया संस्कृति की पहचान है। यह मूलतः कृषि केंद्रित उत्सव है। कृषि से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों जैसे- फसलों की बुवाई, कटाई आदि के आधार पर पूरे वर्ष के दौरान तीन बिहू उत्सव मनाये जाते हैं। यथा- रंगाली बिहू, भोगाली बिहू और कंगाली बिहू। असमिया समाज में इन्हें अन्य नामों से भी जाना जाता है। जैसे- नववर्ष के शुभारंभ के अवसर पर 'बहाग बिहू', कार्तिक महीने के प्रारंभ होने पर 'काति बिहू' और मकर संक्रांति के अवसर पर 'माघ बिहू' के रूप में भी इन्हें मनाया जाता है। असमिया समाज में तीनों बिहू उत्सवों को अलग-अलग रीति-रिवाजों के अनुसार हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। 'बहाग बिहू या रंगाली बिहू' को अत्यंत आनंद के साथ मनाया जाता है। इस दौरान 'हूसरि गीत' गाने की विशेष प्रथा है। इसमें गाँव के युवक इकट्ठा होकर लोगों के घरों में जाकर लोकगीत गाते हैं तथा लोकनृत्य करते हैं। इन गीतों को ही मूलतः बिहू गीत के रूप में जाना जाता है। 'हूसरि' गीतों में अधिकांशतः रामकथा के करूण प्रसंगों को ही आधार बनाया गया है। बिहू के आनंदपूर्ण क्षणों में भी बिहू करने वाले युवक राम की वेदना से आत्मीयता का अनुभव करते हैं। अपने सुख के क्षणों में किसी के दु:ख को देखकर दुखी हो जाना गहन आत्मीयता की निशानी है। इसका प्रमाण हमें उन हूसरि गीतों में मिलता है जिनमें राम के वन गमन के पश्चात अयोध्यावासियों की दारुण व्यथा का जिक्र है-

हायरे हाय ! राम... राम आजि बने चलि जाय।[10]

इसी तरह –

राम बनवासे गॅल, कैकेयीर मन भाल हॅल।

बिहू गीत गाने वाले युवक गीतों में इस घटना पर दुख प्रकट करते हैं कि सीता-हरण से अनभिज्ञ राम को इस घटना के बारे में कौन सूचित करेगा-

प्रभुदेव आसिले बने फुरि	'प्रभु जी वन में घूम रहे थे
रावने लोई गोल सीताक हरि	रावण ने सीता का हरण कर लिया
लक्ष्मण गोइसिल बने	लक्ष्मण भी वन में गये हुए थे
देही ओई बातरि दिबोगोई कोने॥[11]	हाय, कौन उन्हें यह संदेश देगा॥'

यहाँ राम के प्रति बिहुवा युवकों (बिहू गीत गाने वाले युवक) की संवेदनशीलता, आत्मीयता तथा उन युवकों की परदुखकातरता देखने योग्य है। बिहू गीतों में राम 'मर्यादा-पुरुषोत्तम' के गंभीर आवरण से बाहर आकर साधारण युवक जैसे व्यवहार करते हैं जो अपनी पत्नी के वियोग से व्याकुल होकर रोने लगते हैं। सीता हरण के पश्चात राम की व्यथा और मनोदशा का वर्णन बिहू गीतों में इस प्रकार मिलता है-

रामे बोले लक्ष्मण भाई सीता कोइक गोइला	राम कहते हैं, भाई लक्ष्मण सीता कहाँ चली गयी
दंदुका बनते सीता रावने हरिला	दन्दुक वन से सीता का रावण ने हरण कर लिया
....	....
राम कान्दे इनाइ-बिनाई लक्ष्मण कान्दे रोई	राम सिसक-सिसककर रोने लगे और लक्ष्मण भी
बाटते जटायु कान्दे सीतार कथा कोई	रास्ते में सीता की बात करके जटायु रोया।
....	....
राम कान्दे, लक्ष्मण कान्दे, कान्दे दुई भाई	राम रो रहे हैं, लक्ष्मण रो रहे हैं, रो रहे हैं दोनों भाई
हनुमंतई गसर दालत सीतार गुने गाय[12]	हनुमान भी पेड़ की डाली पर बैठकर सीता का गुण गा रहे हैं

कुछ बिहू गीतों में जहाँ राम को भगवान का दर्जा दिया गया है वहीं राम द्वारा किये गये कुछ अन्यायपूर्ण कार्यों एवं फैसलों जैसे- बालि वध, सीता को गर्भावस्था में वनवास देना, शंबुक वध आदि पर उनसे प्रश्न भी किया गया है। जैसे-

'राम राम राम राम राम नारायण।	राम राम राम राम राम नारायण
बालिक वध करिला प्रभु की कारण॥'	बालि का वध किया आपने, किस कारण॥'
....	....
रामचन्द्र गोसाँई तुमि अकार्ज करिला	रामचन्द्र प्रभु तुमने अनुचित कार्य किया
सीता मातृ गर्भावती बनत एरिला[13]	गर्भवती सीता माता को वन में छोड़ा॥'

इस प्रकार राम कथा के उज्ज्वल और स्याह दोनों ही पक्षों का बहुत ही मार्मिक वर्णन बिहू गीतों में मिलता है। इस क्रम में राम और राम कथा के प्रति असमिया जाति की आत्मीयता का भी पता चलता है। यहाँ राम के प्रति सिर्फ अंधभक्ति नहीं दिखाई देती बल्कि असमिया समाज के लोगों द्वारा राम से किये गये

कतिपय अन्यायों पर प्रश्न से उनकी बौद्धिकता की भी सूचना मिलती है। किसी समाज के लोक हृदय की ऐसी मार्मिक तथा निष्पक्ष अभिव्यक्ति अन्यत्र दुर्लभ है।

बारमाही गीतों में रामकथा:

बारमाही गीत यानी साल के बारहों महीने गाये जाने वाले विभिन्न गीत। असमिया बारमाही गीतों की तुलना हिन्दी साहित्य के बारहमासा गीतों के साथ की जा सकती है। इन गीतों में साल के बारहों महीने के प्राकृतिक परिवेश के अनुरूप राम तथा सीता की विरह-दशा का वर्णन मिलता है। असमिया बारमाही गीतों में 'राम बारमाही गीत' तथा 'सीता बारमाही गीत' बेहद प्रचलित है। राम बारमाही गीतों में राम के वनवास से लेकर सीता-हरण तक की घटना का वर्णन मिलता है। इन गीतों में राम का प्रजा के चहेते राजा के रूप में वर्णन किया गया है, जिनसे बिछुड़ने पर लोगों को सारा संसार अंधकारमय लग रहा है-

पुहर मासते राम बने कोइला सार	राम ने कहा पौष महीने में वन जाएंगे
अजोध्यार नर आसे राम देखिबार	अयोध्या की प्रजा राम को देखने आयी।
अजोध्यार नर-नारी करे हाहाकार	अयोध्या के नर-नारी हाहाकार करने लगे
राम प्रभु अबिहने जगत आंधार[14]	प्रभु राम के बिना जगत अंधकारपूर्ण है।

'राम बारमाही गीत' के अनुसार माघ महीने में राम 'दिगंबर वास (दिगंबर वेश धारण) करते हैं, फाल्गुन के महीने में 'रामर पेटत लागे भूक' (राम के पेट में भूख की ज्वाला उठती है)। असमिया लोक कवि के अनुसार तब राम ने धनुष को भूमि पर रखा और पेड़ पर चढ़कर फल तोड़ा और लक्ष्मण ने सारा इकट्ठा किया। तब राम को अकस्मात उस क्षण की याद आती है जब वे अयोध्या के राजकुमार थे। उनके आगे-पीछे अनेक लोग घूमते थे। चैत्र के महीने में धूप के कारण सीता का गला सूख जाता है और गर्म बालू पर चलना सीता के लिए मुश्किल हो जाता है। तब राम वृक्षों की डालियों को नीचे खींचकर सीता के लिए छाँव की व्यवस्था करते हैं। बैशाख महीने में राम यज्ञ करते हैं, जिसमें लाखों ऋषि-मुनियों का आगमन होता है। वन में भी राम ने इन सभी ऋषि-मुनियों का यथासंभव स्वागत किया और दान-दक्षिणा भी दिया। ज्येष्ठ महीने में लोककवि ने यह कहा है कि वन में राम के पास घर-बार कुछ नहीं है। बस पत्नी है और भाई है। लेकिन इस अवस्था में भी राम अत्यंत सुखी हैं। आषाढ़ के महीने में अयोध्या से लोग आकर विलाप करने लगते हैं कि राम के बिना हमारा जीवन दिन में ही अंधकारमय हो गया है। श्रावण महीने में भारी वर्षा होने पर राम सोचने लगते हैं-

माथाय हात दिया भाबे अरण्य भीतरे	माथे पर हाथ रखकर राम वन में सोचते हैं
पितृवाक्य पालिते आइलो भाई दुईजन	पिता के वचन का पालन कर दोनों भाई यहाँ आ गए
निदारून मातृ बने दिला कि कारण।	निर्दयी माता तुमने किस कारण से हमें वन भेजा।

भाद्र महीने में राम के सामने एक विपत्ति आयी- 'सुवर्णर मृग एक आसि देखा दिल' (एक सोने का मृग दिखाई देने लगा)। आश्विन के महीने में सीता की बात सुनकर राम उस मृग के शिकार पर निकले। कार्तिक महीने में उस मृग ने राम की तरह आवाज निकाला। सीता के फटकारने पर लक्ष्मण भाई को ढूँढने निकले। लोककवि के अनुसार इस अवसर पर ही कार्तिक महीने के शुक्ल पक्ष में रावण ने सीता का हरण किया।

इस प्रकार असमिया 'राम बारहमाही गीत' में राम का उल्लेख मिलता है, जिसमें राम कभी ऋषि-मुनियों के भी पूज्य हैं तो कभी सौतेली माता की निर्दयता से व्यथित साधारण व्यक्ति भी।

नावखेलोवा गीतों में रामकथा:

मानव जीवन में श्रम के दौरान गीतों का विशेष महत्त्व है। नाविक को नाव चलाते समय होने वाले श्रम के कारण जो थकान होती है उसे कम करने के लिए वे गीत गाते हैं। पतवार की ताल पर गाये जाने वाले इन गीतों को 'नावरीया गीत' कहा जाता है। असमिया साहित्य की विशिष्ट लेखिका केशदा महंत के अनुसार 'विभिन्न धर्मीय उत्सवों में, खासकर बरपेटा में होनेवाले 'नावखेल' में व्यवहृत होने के बाद 'नावरीया गीतों' को 'नावखेलोवा गीत' कहा जाने लगा।' इन नावखेलोवा गीतों में भी रामकथा के विभिन्न प्रसंग समाहित हैं। उदहारण के तौर पर इन पंक्तियों को देखा जा सकता है-

राम आसिल रे मायामृग मारि	'राम माया मृग का वध कर रहे थे
माया करे मारीस माया चूड़ामणि	माया शिरोमणि मारीच माया कर रहा था
माया मृग धरी साधोई रामर बिघिनि	माया मृग पकड़कर राम ने विपत्ति को गले लगा लिया
आँतर करिला राम लक्ष्मण दुई भाई	राम और लक्ष्मण दोनों भाइयों को उसने दूर कर दिया
हरिला रावने सीता शून्य घरे पाय॥[15]	अकेले पाकर रावण ने सीता का हरण कर लिया॥'

'नावखेलोवा गीतों' में भी अन्य असमिया लोकगीतों की ही तरह राम-सीता के मिलन की कथा वर्णित है। इन गीतों की अंतर्वस्तु वाल्मीकि रामायण पर ही आश्रित है। इनमें लोककवि की मौलिकता ज्यादा देखने को नहीं मिलती।

अन्य लोकगीतों में रामकथा :

उपर्युक्त लोकगीतों के अलावा असमिया जनजीवन में दिहानाम, तुलसीनाम, दुर्गानाम आदि लोकगीतों का भी प्रचलन है। इन सभी गीतों में कमोबेश रामकथा की उपस्थिति है। 'दिहानाम' मूलतः ईश्वर की आराधना से संबंधित से गीत है। इन गीतों को 'उपदेश गीत' भी कहा जा सकता है क्योंकि 'दिहा' का अर्थ ही 'उपदेश' है। इन गीतों में राम और सीता की कहानी को करुण कथा के रूप में गाया जाता है। इनमें

सदा ही आशावादी दृष्टिकोण से कथा को प्रस्तुत किया जाता है। भारतवर्ष के अन्य समाजों की तरह असमिया समाज में भी 'तुलसी के पौधे' की बहुत अधिक मान्यता है। एक तुलसीनाम लोकगीत के अनुसार- 'जिटो जने तुलसीर डाले-मुले सिडे/ साताम पुरुष तार नरकत परे' अर्थात 'जो व्यक्ति तुलसी के पौधे को उखाड़ता है, उसके सात पीढ़ियाँ नरक में चली जाती हैं। असमिया तुलसी गीतों में इस पवित्र तुलसी को राम द्वारा लाया गया बताया जाता है। राम द्वारा लाये गये तुलसी के पौधे को लक्ष्मण ने सींचा और सीता ने गोबर से तुलसी के नीचे के स्थान को पवित्र किया। इसलिए 'तुलसीनाम' में यह भी गाया जाता है कि पवित्र तुलसी को लाने वाले भगवान राम के चरणों में ही जनम-जनम तक हमारा मन लगा रहे। 'दुर्गानाम' में सामान्यतः राम को ईश्वर के रूप में नहीं बल्कि भक्त के रूप में दिखाया जाता है। लंका पर विजय हासिल करने हेतु राम द्वारा शक्ति-पूजा की कथा का वर्णन इन गीतों में मिलता है। इस कथा का ज़िक्र वाल्मीकि रामायण से लेकर कृतिवासी रामायण तथा निराला की 'राम की शक्तिपूजा' तक मिलता है।

बहरहाल, लोक साहित्य से किसी भी समाज और संस्कृति का पहचान जुड़ी होती है। इसमें मौलिकता, संगीतात्मकता, उच्च मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था आदि का विशिष्ट गुण होता है, खासकर लोकगीतों में। लोक गीतों का लोक साहित्य में अन्यतम स्थान है। असमिया लोकगीत अपनी मधुरता एवं स्थानीय संस्कृति की जीवंत अभिव्यक्ति के लिए विख्यात है। इन गीतों में इतिहास और परंपरा का अविछिन्न प्रवाह है। विशेष रूप से वैसे लोकगीतों में जो राम कथा पर आधारित हैं। इन गीतों में राम के आदर्श एवं मर्यादा की सहज अभिव्यक्ति हुई है। जीवन के विभिन्न संस्कारों से जुड़े ये गीत अपने 'लोकल फ्लेवर' तथा 'फोक एलिमेंट्स' के कारण अद्भुत हैं जो राम कथा को एक नया, अनोखा तथा मौलिक आयाम देते हैं। राम कथा पर केंद्रित असमिया लोकगीत समाज में उच्च मानवीय मूल्यों की स्थापना हेतु प्रतिबद्ध हैं खासकर ऐसे समय में जब गालिब कहते हैं कि- 'आज दुश्वार है हर काम का आसां होना/ आदमी को भी मयस्सर नहीं इंसां होना।'

संदर्भ-सूची:

1. महंत, केशदा, असमिया रामायणी साहित्य: कथावस्तुर आँतिगुरि, पृ. सं. 704
2. वही, पृ. सं. 705
3. वही, पृ. सं. 706
4. वही, पृ. सं. 707
5. वही, पृ. सं. 706
6. वही, पृ. सं. 708

7. वही, पृ. सं. 709
8. वही, पृ. सं. 707
9. वही, पृ. सं. 708
10. वही, पृ. सं. 712
11. वही, पृ. सं. 712
12. वही, पृ. सं. 712
13. वही, पृ. सं. 713
14. वही, पृ. सं. 714
15. वही, पृ. सं. 723

सहायक ग्रंथ-सूची:

1. महंत, केशदा, असमिया रामायणी साहित्य: कथावस्तुर आँतिगुरि, महंत प्रकाशन, जोरहाट, 1990
2. नाथ, डॉ. ध्रुवज्योति, रामकथा आश्रयी असमिया साहित्य,पुर्वांचल प्रकाश, गुवाहाटी, 2014
3. शर्मा, डॉ. नवीनचन्द्र, असमर लोकसाहित्य, ज्योति प्रकाशन, गुवाहाटी, 2014
4. नेओग, महेश्वर, असमिया साहित्यर रूपरेखा, गुवाहाटी, 2012
5. शर्मा, डॉ. सत्येन्द्रनाथ, रामायणर इतिवृत्त, बिना लाइब्रेरी, गुवाहाटी, 2013
6. शर्मा, डॉ. सत्येन्द्रनाथ, असमिया साहित्यर समीक्षात्मक इतिवृत्त, अरुणोदय प्रेस, गुवाहाटी, 2011
7. गोस्वामी, इंदिरा, रामायना फ्रॉम गंगा टू ब्रम्हपुत्रा, बी. आर. पब्लिशिंग कार्पोरेशन, दिल्ली,1996
8. बुल्के, फादर कामिल, रामकथा उत्पत्ति और विकास, हिंदी परिषद प्रकाशन, इलाहाबाद, 2012
9. मागध, कृष्ण नारायण प्रसाद, शंकरदेव साहित्यकार और विचारक,पंजाब यूनिवर्सिटी, पटियाला,1976

(**परिचय** : लेखक तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम के हिंदी विभाग में सहायक प्रोफ़ेसर पद पर कार्यरत हैं।)